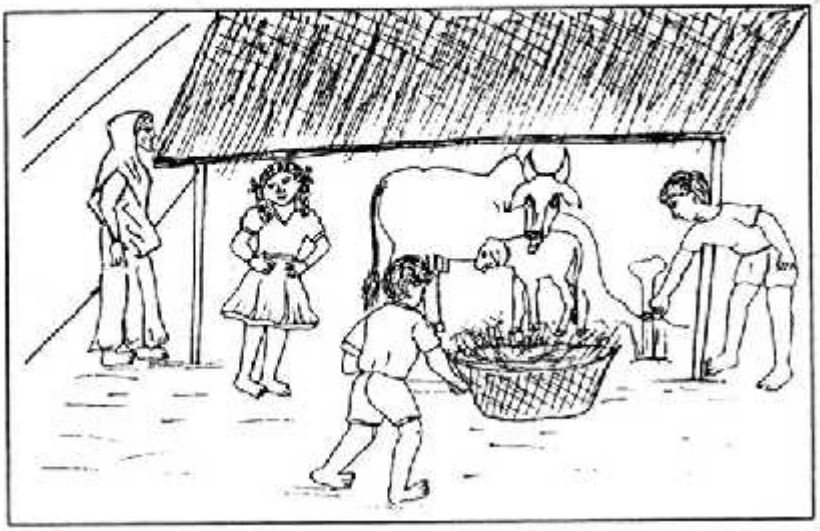

बचपन

बात उतनी ही पुरानी है जितना बचपन। बचपन की छुट्टियों के दिनों की बात है। इधर छुट्टियां शुरू होतीं, उधर नानी के घर जाने की तैयारी होने लगती। मां शर्त रखती। पहले स्कूल का काम खत्म करो फिर नानी के घर की बात। हमारे बचपन में न स्कूल का बस्ता इतना भारी था और न ही ढेर सारा होमवर्क (स्कूल का काम)। सो कुछ ही दिनों में काम खत्म हो जाता और हम लोग नानी के घर के लिए चल पड़ते।

स्टेशन की चहल-पहल में भी गाड़ी की खिड़की वाली सीट घेरना कोई न भूलता था। बार-बार झांक कर सिग्नल और गार्ड की झंडी का हिसाब रखा जाता। इधर गाड़ी चलती और उधर भूख लग आती। छीना-झपटी भी होती और लेना-देना भी। मोड़ों पर इंजन और सारी गाड़ी को देखने की ललक में कई बार आँखें धुंएं और धूल-मिट्टी से भर जातीं। डांट पड़ती। मल-मसल कर, पानी के छींटे देकर धूल-मिट्टी निकाली जाती और फिर वही सब नए सिरे से शुरू हो जाता।

दिल्ली से चलते ही अमृतसर से पहले वाले स्टेशन का इंतज़ार शुरू हो जाता। गाड़ी रुके तो, और न रुके तो, हर स्टेशन का नाम ज़ोर-ज़ोर से बताने का अपना ही मज़ा था। गाड़ी रात की हो या दिन की, इस कार्यक्रम में कोई तबदीली न आती। हां, रात में कभी कभी आँख झपक ज़रूर जाती।

अमृतसर के स्टेशन पर नाना, मामा या मौसी आए होते। गाड़ी के प्लटफार्म पर रुकने से पहले ही हम उन लोगों को चिल्ला-चिल्ला कर पुकारते। स्टेशन से घर काफी दूर था। पर बातों में रास्ते का पता ही नहीं लगता था। घर पहुंचते ही पहला काम होता था – भैंस या गाय और उनके बच्चों को देखना। नानी के घर में हमेशा गाय या भैंस या दोनों ही होतीं थीं। एक बार की याद है, जब कोई भी जानवर नहीं था तो पिछली छुट्टियों वाला मज़ा नहीं आया था।

गाय-भैंस के बाद नानी का नंबर आता और फिर नानी आगे और हम पीछे। नानी हमें बहुत अच्छी लगती थीं। एक तो वह डांटती कभी नहीं थीं और दूसरा, पढ़ने के लिए भी नहीं कहती थीं। उनका विश्वास था कि ज़्यादा पढ़ने से आंखें खराब हो जाती हैं। तीसरी और असली बात थी – वह बहुत अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को दिया करती थीं। बचपन में डांट न पड़े, पढ़ने को न कहा जाए और खाने से रोका न जाए – इस से अच्छी कोई बात हो सकती है क्या?

काम क्या है और नानी कितना करती थीं इसकी तब न समझ थी और न अहसास। आज सोचता हूं तो हैरानी होती है। अकेली जान और इतना ढेर-सा काम। नानी का दिन तारों की छांव में शुरू होता था। जब तक हम उठते, तब

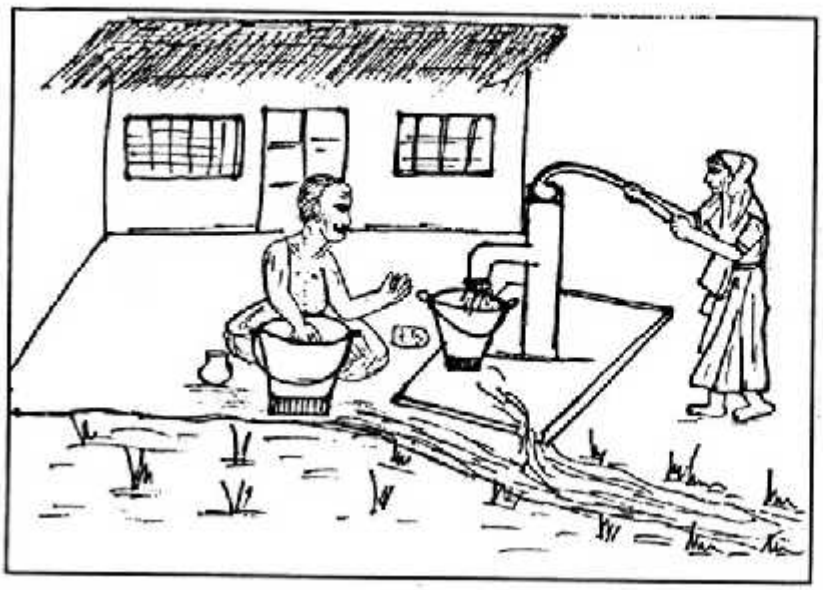

तक दही बिलो कर मक्खन निकाल रही होती थीं। इस समय तक घर की सफाई कर चुकी होतीं। भैंस का खाना - पीना भी। ग्वाला दूध दुहकर जा चुका होता और अगर कभी वह न आता तो दूध भी नानी को ही दुहना पड़ता।

इन सब कामों के साथ-साथ, नाना को नहला-धुला कर मंदिर रवाना करके वह दही बिलोना शुरू करतीं। नाना को नहलाना-धुलाना कुछ अटपटा सा लगता है पर बात सही है। वह हैंडपंप चलातीं और नाना नहाते। नाना के कपड़े वगैरह भी नानी ही धोतीं और यदि नानी कुछ और कर रही होतीं तो नाना घर को सिर पर उठा लेते।

ताज़े मक्खन के साथ बासी रोटी का नाश्ता मेरा मनपसंद खाना था। खाने के बाद हम लोग खेलने के लिए निकल जाते और नानी खाने की तैयारी और दूसरे लोगों के नाश्ते इत्यादि में जुट जातीं। नानी के घर दोपहर के खाने में सब्ज़ी बनती थी और दाल रात को।

खाने के बाद दिन में वह या तो चर्खे पर सूत काततीं या छोटे से लकड़ी के खड्डे पर परान्दे या निवाड़, नाले (नाड़े) बुनतीं। शाम को फिर भैंस को खिलाना-पिलाना, दूध दुहना और दूसरे कामों के अलावा खाने की तैयारी। दाल तो वह सारी शाम उपलों की हल्की-हल्की आंच पर उबलने के लिए रख देतीं थीं। उस दाल की मिठास और ज़ायके का अंदाज़ा बिना खाए करना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। रात के खाने के बाद सब लोगों को दूध पिला कर सुलाना भी नानी की ही ज़िम्मेदारी थी।

इन सब कामों के अलावा नानी अचार-मुरब्बे भी बनाती थीं। दालें, मसाले छान-बीन कर बर्तनों में भरकर रखना भी वही करती थीं। कभी-कभी जब सब लोगों का तंदूरी परांठे खाने का मन होता तो वे नानी से कहते। और नानी भरी दोपहर में तंदूर गरम करके परांठे बनाती थीं। उस समय उनका चेहरा तंदूर जैसा ही चमचमाया होता। हम बच्चे ऊपर की तीसरी मंज़िल से नीचे ठंडी ड्योढ़ी में गर्मागर्म परांठे पहुंचाने का काम करते थे।

यह बताना ज़रूरी है कि अमृतसर में हमारी नानी का मकान भी, और मकानों की तरह, तीन मंज़िला ही था। ड्योढ़ी नीचे और रसोई आमतौर पर दूसरी मंज़िल पर होती थी। सर्दियों में तो हम लोग ऊपर ही खाना खाते पर गर्मी के दिनों में दोपहर का खाना नीचे ठंडी ड्योढ़ी में ही खाया जाता।

नानी को दिन में आराम करते या बिना काम करते कभी देखा हो, मुझे याद नहीं। काम और काम। नानी जैसे काम के ही लिए बनीं थीं।

छुट्टियां कब खत्म हो जातीं पता ही नहीं लगता था। वापिस आने का मन नहीं होता था पर फिर भी आना तो पड़ता ही था। और फिर अगले साल की छुट्टियों का इंतज़ार शुरू हो जाता।

अभ्यास

1. नानी रोज़ कौन-कौन से काम करती थी? (पहले क्या फिर क्या ....) । कौन से काम थे जो वे कभी-कभी करती थीं? तुम्हारे घर में यदि कोई बुज़ुर्ग महिला है (नानी, दादी..) तो उनके दिन भर के काम के बारे में लिखो।

2. नानी को रसोई में दही बिलोते हुए कल्पना करो- इसका चित्र बनाओ।

3. इन शब्दों के लिए दूसरे शब्द लिखो-
   नामुमकिन, तब्दीली, ललक, अटपटा, ज़ायका, ड्योढ़ी, बिलोना।

4. तुम कभी रेलगाड़ी/ बस में घूमे हो?
   कहाँ से कहाँ तक?
   रास्ते में कौन-कौन से स्टेशन/ शहर/ गाँव आए थे?

5. तुम गर्मी की छुट्टियों में क्या–क्या करते हो? लिखो-
   क्या किसी दूसरे गांव/ शहर जाते हो? कहां जाते हो और वहां क्या-क्या करते हो? यहाँ रहते हो तो क्या करते हो? 15-20 वाक्यों में लिखो।
   लिखने के बाद सबको पढ़कर सुनाओ।

6. (क) कहानी में बहुत सी-जगह है जहां दो शब्दों के बीच एक छोटी सी '-' है। उन्हें ढूंढ कर लिखो।
   सभी से एक-एक वाक्य बनाओ।
   उदाहरण: धूल-मिट्टी- मंगल जब पूरे दिन के सफर के बाद घर लौटता है, तो वह धूल-मिट्टी में सना होता है।

   (ख) इसमें जो दोनों शब्दों का जोड़ा है उसमें दोनों शब्द अलग-अलग हैं- धूल और मिट्टी।
   दोनों शब्द एक से भी हो सकते हैं - ज़ोर- ज़ोर;
   तुकबन्दी वाले भी हो सकते हैं- चहल- पहल आदि।

   तुमने जो जोड़े ढूँढ़े हैं, क्या उन्हें इन तीन तरह के जोड़ों में बांट सकते हो-

जोड़े के दोनों शब्द एक से	दोनों शब्द अलग	दोनों शब्दों में तुकबन्दी

(ग) यदि हम कुछ शब्दों के जोड़े में दूसरा शब्द बदल दें तो उनका अर्थ कैसे बदलेगा?

(i) कभी-कभी की जगह कभी-कभार?

(ii) ज़ोर-ज़ोर की जगह ज़ोर-जबरदस्ती?

(iii) हल्की-हल्की की जगह हल्की-फुल्की?

(iv) छान-बीन की जगह छान-छान?

- कहानी में छान-बीन का क्या अर्थ है देखो।
  अब यह वाक्य ध्यान से पढ़ो।

(1) कल रात डॉक्टर साहब के यहां चोरी हो गई। पुलिस चोर की छान-बीन में लगी है। दोनों जगह छान-बीन का अर्थ क्या एक ही है?

7. नीचे दिये वाक्यों का उदाहरण देखो। जिन शब्दों के नीचे लाईन खिची है उन से ऐसा ही एक-एक वाक्य और बनाओ।

(क) इधर छुट्टियाँ शुरू होतीं, उधर नानी के घर जाने की तैयारी होने लगती।
तुम्हारा वाक्य :

(ख) पहले स्कूल का काम खत्म करो फिर नानी के घर के बात।
तुम्हारा वाक्य :

(ग) यदि नानी कुछ और कह रही होती तो नाना घर को सिर पर उठा लेते।
तुम्हारा वाक्य :

(घ) वापस आने का मन नहीं होता था पर फिर भी आना तो पड़ता ही था।
तुम्हारा वाक्य :

बिना नाम की नदी

मेरे गांव को चीरती हुई
पहले आदमी से बहुत पहले से
चुपचाप बह रही है वह पतली सी नदी
जिसका कोई नाम नहीं
तुमने कभी देखा है
कैसी लगती है बिना नाम की नदी?
कीचड़, सिवार और जलकुम्भियों से भरी
वह इसी तरह बह रही है कई सौ सालों से
एक नाम की तलाश में
मेरे गांव की नदी।
सूरज निकलने के काफी देर बाद
आती हैं भैंसें
नदी में नहाने के लिए
नदी कहीं गहरे में हिलती है पहली बार
फिर आते हैं झुम्मन मियां
हाथ में लिए बंसी और चारा
नदी में पहली बार एक चमक आती है।
जैसे नदी पहचान रही हो झुम्मन मियां को
दिन भर कितनी मछलियाँ
फंसती हैं उनकी बंसी में?

कितने झींगे, कितने सिवार
पानी से कूदकर आ जाते हैं
उनके थैले के अन्दर
कोई नहीं जानता
नदी को कौन देता है नाम
तुमने कभी सोचा है?
क्या सुबह से शाम
नदी के किनारे
नदी के लिए नाम की तलाश में
एकटक बैठे रहते हैं झुम्मन मियाँ?

● केदारनाथ सिंह

अभ्यास

● कविता में :

- नदी में क्या-क्या है?
- नदी पर भैंसे क्यों आती हैं?
- नदी पर झुम्मन मियां क्यों आते हैं?
- झुम्मन मियां नदी से क्या-क्या ले जाते हैं?
- क्या तुम्हारे गांव के पास कोई नदी है? उस नदी का क्या नाम है?

● पता करो कि तुम्हारे गांव का नाम कैसे पड़ा और कॉपी में लिखो।

● इस नदी के किसी एक समय के दृश्य को 5-10 वाक्यों में लिखो।

● नदी से तुम्हें क्या-क्या मिलता है?

● सबसे ज़्यादा पानी किस मौसम में होता है?

● नामों के बारे में :

- तुम अगर झुम्मन मियाँ होते तो इस नदी को क्या नाम देते?
- पता करो तुम्हारा और तुम्हारे साथियों के जो नाम हैं वे क्यों रखे गए थे?

निबंध लिखना

चरण–1. अपने गुरूजी के साथ मिलकर निबंध का विषय तय करो। जैसे– ' पेड़ '

चरण–2. विषय तय हो जाने पर दो मिनिट उस विषय पर सोचो और चर्चा करो जैसे– पेड़ कैसा होता है ? कहाँ होता है ? उसमें क्या–क्या होता है ? क्या लगता है ? चर्चा के आधार पर 2–3 वाक्य लिखो।

चरण–3. शिक्षक उस विषय से जुडे 5–6 शब्द दें जो निबंध की विषयवस्तु से मौलिक रूप से जुड़े हों। बच्चे 4–5 वाक्य लिखें। शब्द दिए– जैसे जंगल, हरा, टहनियाँ, फूल, फल

पेड़ हरा होता है। ये पेड़ की नई टहनियां होती है। पेड़ पर फूल मिलते हैं। पेड़ पर फल लगते हैं। जंगल में ढ़ेर सारे पेड होते हैं।

चरण–4 इसके बाद कुछ और शब्द दें जो ऊपर दिए गए शब्दो से संबंधित या थोड़े कल्पना शील हों इन शब्दों का उपयोग करके 3–4 वाक्य लिखें।

शब्द दिये– जैसे दोस्त, हवा, पानी, जानवर, वृक्षारोपण।

पेड़ हमारे दोस्त हैं। पेड़ हमें हवा देते हैं। पेड़ों के कारण पानी बरसता है। पेड़ों पर कई पक्षी रहते हैं। पेड़ों की छाँव में जानवर बैठते हैं। बरसात में वृक्षारोपण करने से पेड़ जल्दी उगते हैं।

चरण–5 शिक्षक कल्पनाशील शब्द देकर उनका उपयोग करते हुए 3–4 वाक्य लिखवाएँ

जैसे–संगीत, जीवन, प्रेम, सपना

पेड़ों से जब हवा बहती है तो संगीत जैसी लगती है। पेड़ों पर पंछी गाते हैं तो लगता है जैसे मधुर संगीत बज रहा हो। पक्षियों का तो जीवन ही पेड़ हैं। वे पेड़ से प्रेम भी करते है। और रात दिन पेड़ों का सपना देखते हैं। अगर पेड़ न हों तो क्या होगा।

चरण–6. जिस विषय पर निबंध लिखा जा रहा है, बच्चे स्वयं वह विषय बनकर 2–3 वाक्य लिखे। "अगर मैं पेड़ होता।"

कितना अच्छा होता अगर मैं एक पेड़ होता। में सबको छाया देता सुन्दर फूल देता। मीठे फल देता। बच्चे मुझ पर चढ़कर लटकते और खेलते। मुझे बहुत मजा आता।

चरण–7. अब बच्चे से निबंध पढ़ने को कहें। 'पेड़'

पेड़ हरा होता है। ये पेड़ की नई टहनियाँ होती हैं। पेड़ पर फूल मिलते हैं। पेड़ पर फल लगते हैं। जंगल में ढ़ेर सारे पेड़ होते हैं।

पेड़ हमारे दोस्त हैं। पेड़ हमें हवा देते हैं। पेड़ों के कारण पानी बरसाता है। पेड़ों पर कई पक्षी रहते हैं। पेड़ों की छाँव में जानवर बैठते हैं। बरसात में वृक्षारोपण करने से पेड़ जल्दी उगते हैं। पेड़ों से जब हवा बहती है तो संगीत जैसी लगती है। पेड़ों पर पंछी गाते हैं तो लगता है जैसे मधुर संगीत बज रहा हो। पक्षियों का तो जीवन ही पेड़ है। वे पेड़ से प्रेम भी करते है। और रात दिन पेडों का सपना देखते हैं। अगर पेड न हो तो क्या होगा।

कितना अच्छा होता अगर मैं एक पेड होता। मैं सबको छाया देता, सुन्दर फूल देता। मीठे फल देता। बच्चे मुझ पर चढ़कर लटकते और खेलते। मुझे बहुत मजा आता।

निबंध लिखो

'नदी'

चरण–1 नदी पर पांच वाक्य लिखो।

चरण–2. उद्गम, संगम, किनारे बसे नगर, नदी का नाम, स्नान पर एक–एक वाक्य लिखो

चरण–3. मां, संगीत, आनंद, जीवन, आकाश पर एक–एक वाक्य लिखो।

चरण–4. मैं एक नदी हूँ समझकर पांच वाक्य लिखो।

चरण–5. अब जो लिखा पूरा पढकर सुना दो।

शब्द भण्डार

बच्चों को दो समूहों में बॉटकर बच्चों से कहें। आओ शब्द खोजें।

समूह	शब्द
कपड़ा समूह–	10
फसल समूह	10
जंगल समूह	10
खाने की चीजों का समूह	10
फल समूह	5
फूल	5

1. बच्चे शब्द लिखें। शब्द के अंत में क्या आ रहा है। पूछें अ, ई, इ, आ
2. उनसे मतलब पूछें। 3. और उनसे वाक्य बनाओ।

प्रश्न– पैराग्राफ को पढ़कर उस पर चित्र बनाओ।

दिनेश ने अपने घर में नारियल का पेड़ लगाया। कुछ दिन बाद नारियल का पेड़ बहुत बड़ा होगया। उसमें खूब नारियल लगे। लेकिन तोड़े कैसे, उसने एक बंदर पाला और उसे नारियल तोड़ना सीखाया। जब भी नारियल तोडना होता। बंदर को बोलता। बंदर पेड़ पर चढ़ता। नारियल तोड़कर नीचे फेंकता जाता। दिनेश उठाता जाता।

प्रश्न– शब्द लिखो। (रहते थे, काट दिया, गई, रहता था, फंस गई, रोहू, बिछाया, रहती थी,दोस्ती थी।)

एक तालाब के किनारे एक बगुला _____ । उसी तालाब में एक बड़ी रोहू मछली भी _____ । बगुले और रोहू के बीच बहुत गहरी _____ ___। दोनों हमेशा साथ –साथ _____ ____। एक दिन एक मछुआरे ने तालाब में अपना जाल _____ । रोहू ने अपनी नुकीली चोंच से जाल _____ _____ अब _____ आजाद हो ----------।

दोहे

सीधा सादा डाकिया, जादू करे महान ;
एक ही थैले में भरे, आँसू और मुस्कान।

सुना है अपने गाँव में, रहा न अब वो नीम ;
जिसके आगे माँद थे, सारे बैद–हकीम।

बूढ़ा पीपल घाट का, बतियाए दिन–रात ;
जो भी गुज़रे पास से, सर पे रख दे हाथ।

चीखे घर के द्वार की लकड़ी हर बरसात ;
कटकर भी मरते नहीं, पेड़ों में दिन रात।

इक पलड़े में प्यार रख, दूजे में संसार ;
तोले ही से जानिए, किसमें कितना भार।

चाहे गीता बाँचिए, या पढ़िए कुर्आन ;
मेरा तेरा प्यार ही, हर पुस्तक का ज्ञान।

निदा फाज़ली

प्रश्न– नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो।

1. "एक ही झोले में भरे आँसू और मुस्कान" का क्या मतलब है।
2. बूढ़े पीपल के बारे में क्या कहा गया है?
3. संसार से तुम क्या समझते है।

प्रश्न– शब्दों के अर्थ लिखो।

हकीम मुस्कान बाँचिए चीख घाट